ISSN 2278-8808
An International Peer Reviewed
SJIF 2013 = 4.194
SCHOLARLY RESEARCH JOURNAL
FOR INTERDISCIPLINARY STUDIES

निर्धनता के कारण महिला–पुरूष साक्षरता की वास्तविकता

(औरैया जनपद के विशेष संदर्भ में)

आशुतोष मिश्रा, Ph. D.

अर्थशास्त्र, सिंहवाहिनी महाविद्यालय आदमपुर अजीतमल

Abstract

जनपद औरैया की तहसील औरैया के विकास खण्ड अजीतमल के अन्तर्गत अजीतमल, बाबरपुर, अटसू तथा अनन्तराम में व्यक्तिगत पूछताछ करने पर ज्ञात हुआ कि अजीतमल में ९२ की जनसंख्या में ८२, बाबरपुर में १०० में ८६ तथा अटसू में १०२ में ९३ और अनन्तराम में १०९ में ९७ व्यक्ति साक्षर है। अटसू में स्त्री तथा पुरुष साक्षरता औसत लगभग बराबर है अजीतमल, बाबरपुर, अनन्तराम में स्त्रियो की अपेक्षा पुरुषों का साक्षरता प्रतिशत अधिक है। बालिकाओं का शिक्षा के प्रति जुड़ाव कम होने का यह कारण हुआ कि व्यक्तियों की पारिवारिक आय ज्यादा अच्छी नहीं है। बालिकाओं की कृषि कार्यों में संलिप्तता होने के कारण साक्षरता प्रभावित हुई।

Scholarly Research Journal's is licensed Based on at work awww.srjis.com4.194,2013

SJIF© SRJIS2014

विवेचना एवं निष्कर्ष: किसी भी राष्ट्र के लिये अशिक्षा सबसे बड़ी विकास बाधक सिद्ध होती है। भारत में अशिक्षित लोगों की संख्या अधिक होने से विकास में गम्भीर समस्या को जन्म दिया है। देश में अशिक्षा के कारण जनसंख्या वृद्धि, लिंगानुपात में अन्तर, महिलाओं पर अत्याचार, बाल मजदूरी, बाल बिवाह सामाजिक कुरीतियों आदि को जन्म दिया है। अलग–अलग देशों में साक्षरता के भिन्न–भिन्न मानक होते हैं। भारत में राष्ट्रीय साक्षरता मिशन के अनुसार अगर व्यक्ति को अपना नाम पढ़ना और लिखना आता है तो उसे साक्षर की श्रेणी में रखा जाता है।

''आजादी के समय भारत में साक्षरता दर मात्र १२ प्रतिशत थी । जो बढ़कर २००१ के अनुसार लगभग ६५ प्रतिशत हो गयी। परन्तु आज भी भारत विश्व के अनपढ़ लोगों की संख्या में आगे है। भारत की ६५ प्रतिशत साक्षरता दर में पुरुष साक्षरता दर ७५ प्रतिशत तथा महिला ५४ प्रतिशत है। महिला साक्षरता कम होने का कारण पढ़ने लिखने की गतिविधियों में महिलाओं की पुरुषों पर निर्भरता है।

यह कोई नयी बात नहीं है कि आर्थिक रूप से सम्पन्न लोगों के पास निर्धन लोगों से बेहतर शैक्षिक सुविधायें होती हैं। निर्धन व्यक्ति कुशलता ज्ञान के अभाव में अपने परिवार के भरण पोषण करने के लिये अकुशल मजदूरी के कार्यों में लगा रहता है। मजदूरी के कार्यों में लगा रहने के कारण उसका ध्यान परिवार के भरण पोषण से हटकर शिक्षा की ओर नहीं जा पाता है। जो राज्य शिक्षा पर अधिक खर्च करते है वहाँ की साक्षरता स्पष्ट दिखाई देती है। जिसका उदाहरण केरल है। भारत सरकार ने असाक्षरता के खतरे का मुकाबला करने के लिये बहुत सी योजनायें बनाई और उनको क्रियान्वित किया लेकिन स्वच्छता की घटिया परिस्थितियों, महंगी निजी शिक्षा दोषपूर्ण मिड–डे मील योजना के कारण शिक्षा अभी भी अपने अस्तित्व को पूर्णता से नहीं प्राप्त कर पा रही है।

भारत की कुल आबादी का १६.५ प्रतिशत उत्तर प्रदेश में निवास करता है। उसके बाद भी उत्तर प्रदेश में २००१ के आंकड़ों में साक्षरता दर लगभग ६५ प्रतिशत है। जो प्रदेश की साक्षरता को अच्छा प्रदर्शित नहीं कर रही हैं। साक्षरता की स्थिति में सुधार लाने के लिये केवल सरकार को नहीं बल्कि प्रत्येक शिक्षित नागरिक को असाक्षरता के उन्मूलन में योगदान करने की आवश्यकता है। प्रस्तुत अध्ययन जनपद औरैया की वास्तविकता का आंकलन करता है।

अनुसंधान विधि –

जनपद औरया में अजीतमल, बाबरपुर, अटसू और अनन्तराम शहरों में से २०–२० परिवारों का अध्ययन किया गया। परिवारों का चयन दैव निदर्शन विधि द्वारा किया गया। जिसमें कुल मिलाकर ८० परिवारों का चयन किया गया। अजीतमल में २० परिवारों में ९२, बाबरपुर में १००, अटसू में १०२ तथा अनन्तराम में १०९, लोगों का व्यक्तिगत पूछताछ करके अध्ययन करने पर जो आकड़े प्राप्त हुये उनका औसत प्रस्तुत किया गया है।

सर्वेक्षण आँकडों की स्थिति –

महिला–पुरुष साक्षरता अनुपात –

शहर का नाम	आयु वर्ग	० दृ १०		१० . १८		१८ . ५०		५० से अधिक		कुल जनसंख्या		
	लिंग	स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष	कुल
अजीतमल	औसत	0.50	0.60	0.50	0.50	0.60	0.70	0.30	0.40	1.90	2.20	4.10
	प्रतिशत	36.32	27.27	36.32	22.73	31.58	31.82	15.79	18.18	46.34	53.65	
	कुल सं.	10	12	10	10	12	14	6	8	38	44	82
बाबरपुर	औसत	0.50	0.55	0.50	0.55	0.70	0.80	0.30	0.40	2.00	2.30	4.30
	प्रतिशत	25.00	23.91	25.00	23.91	35.00	34.78	15.00	17.39	46.51	53.49	
	कुल सं.	10	11	10	11	14	16	6	8	40	46	86
अटसू	औसत	0.50	0.60	0.65	0.70	0.70	0.70	0.40	0.40	2.25	2.40	4.65

	प्रतिशत	22.22	25.00	28.89	29.17	31.11	29.17	17.77	16.66	48.39	51.61	
	कुल सं.	10	12	13	14	14	14	8	8	45	48	93
अनन्तराम	औसत	0.55	0.55	0.70	0.80	0.70	0.80	0.35	0.40	2.30	2.50	4.80
	प्रतिशत	29.91	21.57	30.43	31.37	30.43	31.37	15.22	15.68	47.42	52.58	
	कुल सं.	11	11	14	16	14	16	7	8	46	51	97
औसत	औसत	0.51	0.57	0.59	0.65	0.67	0.75	0.34	0.40	2.11	2.36	4.47
	प्रतिशत	24.14	24.13	27.93	27.09	31.71	31.75	16.09	16.93	47.21	52.79	
	कुल सं.	10.2	11.4	11.8	12.8	13.4	15.0	0.68	0.80	42.25	47.25	89.50

अजीतमल में २० परिवारों की औसत साक्षरता अध्ययन में ०—१० वर्ग में ०.५० स्त्री, ०.६० पुरुष १०—१८ वर्ग में ०.५० स्त्री, ०.५० पुरूष, १८—५० वर्ग में ०.६० स्त्री, ०.७० पुरूष तथा ५० से अधिक वर्ग में ०.३० स्त्री, ०.४० पुरुष साक्षर है। अजीतगल में कुल ८२ साक्षर जनसंख्या में ४६.३४ प्रतिशत स्त्रियाँ तथा ५३.६५ प्रतिशत पुरूष साक्षर है। ०—१० वर्ग में १० स्त्रियाँ, १२ पुरूष १०—१८ वर्ग में १० स्त्रियों १० पुरूष १८—५० वर्ग में १२ स्त्रियों १४ पुरूष तथा ५० से अधिक वर्ग में ६ स्त्रियों ८ पुरूष साक्षर है। साक्षरता में स्त्रियों की तुलना में पुरुषों का औसत अधिक है, जिसका कारण लड़कियों की शिक्षा पर कम ध्यान देना है। बाबरपुर में कुल २० परिवारों में ८६ साक्षर लोगों में से ४० स्त्रियाँ तथा ४६ पुरुष साक्षर मिले विभिन्न आयु वर्गों में बांटकर अध्ययन करने से स्पष्ट हुआ कि स्त्रियों तथा पुरुषों का साक्षरता औसत क्रमश: ०—१० वर्ग में ०.५५—०.५५,१०—१८ वर्ग में ०.५०—०.५५,१८—५० वर्ग में ०.७०—०.८० तथा ५० से ऊपर वर्ग में ०.३०—०.४० है। बाबरपुर में महिलाओं का प्रत्येक वर्ग में साक्षरता औसत पुरूषों की तुलना में कम रहा है जो पुरुष प्रधान मानसिकता का प्रमाण है।

अटसू में कुल २० परिवारों में औसत साक्षरता अध्ययन में स्पष्ट हो रहा है कि अजीतमल बाबरपुर की भांति प्रत्येक वर्ग में साक्षरता की स्थिति निम्न प्रकार रही। ०—१० वर्ग में ०.५० स्त्री ०.६० पुरूष १०—१८ वर्ग में ०.६५ स्त्री .०.७० पुरूष १८—५० वर्ग में ०.७० स्त्री ०.७० पुरुष तथा ५० से अधिक वर्ग में ०.४० स्त्री तथा ०.४० पुरूष कुल ९३ साक्षर जन संख्या में ४५ स्त्रियों तथा ४८ पुरूष साक्षर मिले जिनका प्रतिशत कमश: ४८.३९. तथा ५१.६१ है। अटसू में स्त्रियों की साक्षरता पुरूषों की साक्षरता के लगभग बराबर है। अनन्तराम में २० परिवारों में केवल ९७ सदस्य साक्षर है जिनमें ४६ स्त्रियाँ तथा ५१ पुरूष है जिनका प्रतिशत स्त्री पुरुष में क्रमश: ४७.४२ तथा ५२.५८ है। विभिन्न आयु वर्ग में देखने पर स्पष्ट हुआ कि ०—१० वर्ग में साक्षरता औसत ०.५५ स्त्रियाँ ०.५५ पुरुष १०—१८ वर्ग में ०.७० स्त्रियों तथा ०८० पुरूष १८—५० वर्ग में ०.७० स्त्री, ०.८० पुरुष तथा ५० से ऊपर ०.३५ स्त्री ०.४० पुरुष है।

चारों क्षेत्रों में विभिन्न वर्ग में औसत साक्षरता की स्थिति निम्न प्रकार रही ०—१० वर्ग में ०.५१ स्त्रियाँ ०.५७ पुरुष १०—१८ वर्ग में ०.५९ स्त्रियों ०.६५ पुरुष १८—५० वर्ग में ०.६७ स्त्रियाँ ०.७५ पुरुष तथा ५० से अधिक वर्ग में ०.३४ स्त्रियाँ ०.४० पुरुष कुल २० परिवारों की औसत साक्षरों की संख्या ०—१० वर्ग में १०.२ स्त्रियाँ, ११.४ पुरुष, १०—१८ वर्ग में ११.८ स्त्रियों १२.८ पुरूष १८—५० वर्ग में १३.४ स्त्रियों १५ पुरुष है।

विश्लेषण

जनपद औरया में अजीतमल बाबरपुर अटसू तथा अनन्तराम के अध्ययन से स्पष्ट है कि सभी क्षेत्रों में शिक्षण संस्थाओं की संख्या ठीक है। फिर भी स्त्रियों की साक्षारता पुरुषों से काफी कम है। जो स्त्री पुरुष में भेदभाव को स्पष्ट करता है। आज भी प्रत्येक परिवार शिक्षा के मामले में बालकों को बालकाओं से अधिक महत्व दे रहा है तथा दूसरा कारण यह भी है कि आर्थिक स्थिति ज्यादा अच्छी न होने के कारण यहां पर स्त्रियी गृह कार्यों तथा कृषि कार्यों में परिवार के साथ सहभागिता रखती है। जिससे उनकी शिक्षा अवरुद्ध हो जाती है। रंजन राय (२०००). शान्ता सिन्हा (२००६) इंदिरा राजारमण (२००७). डाञ मुकेश शर्मा सुषमा अग्रवाल ने भी निर्धनता के कारण शिक्षा पर पड़ने वाले प्रभावों को प्रस्तुत किया है। उपर्युक्त सभी के अनुसार साक्षरता का सीधा प्रभाव निर्धनता से है।

निष्कर्ष

उपर्युक्त अध्ययन पीञ एचडीञ के अध्ययन के अन्तर्गत आने वाले आकड़ों के अनुसार प्रस्तुत है। जिसमें ग्रामीण क्षेत्रों में विशेषकर औरैया तहसील में भी रोजगार के साधन बिल्कुल नहीं है। अत: परम्परागत सीमित आय के साधनो कृषि पशुपालन तथा अपने घरेलू कार्यों में ग्रामीण परिवार के बच्चे विशेष रूप से बालिकायें सहयोग करती हैं। यदि रोजगार के साधन तथा शिक्षा के प्रति जागरूकता लायी जाये तो आज साक्षरता की यह स्थिति नहीं देखने को मिलती और न ही स्त्रियों में पुरुषों की अपेक्षा शिक्षा के प्रति इतनी उदासीनता देखने को मिलती रोजगार के साधनों का सही प्रबन्धन किया जाये तो औरैया में महिला साक्षरता का प्रतिशत प्रदेश के अन्य जिलों की तरह उत्तम होता और साक्षरता की समस्या का हल मिलता।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

अभिताभ तिवारी (१९९६—९७) ''भारत में शिक्षा विशेष रूप में महिलाओं के सम्बन्ध में''वार्ता XVII अप्रेल ट्ट अक्टूबर पृष्ठ सं. (११५—१२३)

अशोक कुमार (२००६) ग्रामीण भारत में लड़कियों की शैक्षिक स्थिति कुरुक्षेत्र नवम्बर पृष्ठ सं० ०५

सुभाष सेतिया (२००६)ोजगार के क्षेत्र में महिलायें योजना अक्टूबर पृष्ठ संञ ४३

शान्ता सिन्हा (२००६)''गरीबों के लिये शिक्षा का हक'' योजना नवम्बर पृष्ठ सं० १५—१९

अरोड़ा आर.सी. उद्योग एवं ग्रामीण विकास

प्रतियोगिता दर्पण (२००७—०८)''भारत में गरीबी'' (अतिरिक्तांक : भारतीय अर्थव्यवस्था) पृष्ठ सं. ४९

प्रकाश नारायण नटाणी (२००७) ग्रामीण गरीबी तथा बेरोजगारी कारण और समाधान कुरुक्षेत्र जुलाई पृष्ठ संज्ञ ४०—४४

डॉ. बी०सी० सिन्हाभारत में निर्धनता या गरीबी डॉ. पुष्पा सिन्हा भारतीय अर्थव्यवस्था एस.बी.पी.डी. पब्लिसिंग हाउस (पृ.स. २५४—२६०)

नरेनी सिंह जोसी (२००६) ''ग्रामीण बाजार'' योजना अप्रेल पृष्ठ सं. २५—२९